M.A. 1st Sem.
Sub- Psychology (Research methodology)
Prof. (Dr.) Krishnanand (Continue)
Date- 08-04-2021

सावधानी पूर्वक देखना पड़ता है कि कोई भी बहिरंग (extraneous variables) प्रयोज्यों अर्थात् अध्ययन किए जाने वाले समूहों को किसी भी प्रकार प्रभावित तो नहीं कर रहा है। अगर कोई भी बाहिरंग चर सभी समूहों पर समान रूप से प्रभाव डाल रहा होता है तो उसे नियंत्रित करना जरूरी नहीं होता है।

(10) प्रयोज्यों का चयन करना और समूह आवंटित करना —

जन संख्या से यादृच्छिक (randomly) प्राप्त प्रतिदर्श को शोध की आवश्यकता के अनुसार उम्र, लिंग, या किसी और अध्ययन के अनुरूप समान समूहों में विभक्त कर शोधार्थी द्वारा अध्ययन किया जाता है।

किसी भी अध्ययन में प्रयोज्यों के कितने समूह होते हैं यह इस बात पर निर्भर करता है कि प्रयोग में कितने स्वतंत्र चर हैं। साथ-ही-साथ यह भी ध्यान देना आवश्यक है कि स्वतंत्र चर में कितने स्तर हैं तथा बाहिरंग चरों का स्वरूप क्या है।

(11) परीक्षण संचालन और प्रदत्त संग्रह — Test administration and data collection) —

M.A. 1st Sem.
Sub- Psychology (Research methodology)
Prof. (Dr.) Krishnanand (Continue)
Date- 08-04-2021

यह चरण काफी महत्वपूर्ण माना गया है। इसमें शोधार्थी द्वारा काफी सावधानी बरतने की आवश्यकता पड़ती है। निश्चित समय और स्थान के अनुसार शोधकर्ता प्रयोज्यों के पास जाते हैं। परिकल्पना के अनुरूप परीक्षणों का संचालन शोधकर्ता करते हैं। जरूरत के हिसाब से कभी-कभी परीक्षणों का संचालन मात्र एक बार किया जाता है और कभी-कभी आवश्यकतानुसार परीक्षणों को कई भागों में बाँट कर किया जाता है।

(12) परिणाम एवं विवेचना — (Result and discussion) —

शोध कार्य के इस चरण में प्रयोग से प्राप्त आँकड़ों का सांख्यिकीय परीक्षण किया जाता है। इससे आँकड़ों का मूल्यांकन होता है और परिणाम की विश्वसनीयता प्राप्त होती है। इसके लिए टी-टेस्ट, काई-टेस्ट या एनोवा (ANOVA) का सहारा लिया जाता है। इससे चर के संबंध में किया गया पूर्वकथन की सत्यता की जाँच विश्वसनीय ढंग से हो जाती है। इस बात की स्पष्ट व्याख्या की जाती है कि चर के संबंध में जो परिकल्पना की गई वह सही है या नहीं।

M.A. 1st Sem.
Sub- Psychology (Research methodology)
Prof. (Dr.) Krishnanand (Continue)
Date- 08-04-2021

(13) परिणाम का सामान्यीकरण करना (Generalization of findings) — अध्ययन के इस चरण में जनसंख्या से प्राप्त प्रतिदर्श को पूरी जनसंख्या के लिए सही ठहराने का प्रयास किया जाता है। प्रतिदर्श के आधार पर प्राप्त परिणाम ~~को पूर्वकथन~~ का सामान्यीकरण इस बात पर निर्भर करता है कि प्रतिदर्श किस सीमा तक जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करता है। ध्यातव्य है कि यादृच्छिक रूप से चयनित प्रतिदर्श पूरी जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करेगा अन्यथा ~~वह~~ प्राप्त परिणाम मात्र प्रतिदर्श तक सीमित रहेगा और यह पूरी जनसंख्या ~~के~~ के लिए नहीं होगा।

(14) शोध रिपोर्ट लिखना (Preparing the research report) — शोध कार्य का अन्तिम चरण शोध रिपोर्ट तैयार करना है। इस चरण में शोधार्थी द्वारा अब तक के सभी कार्यों एवं प्राप्त परिणामों का क्रमबद्ध रूप से एक शोध प्रतिवेदन तैयार किया जाता है ताकि भविष्य में अन्य शोध कर्ताओं द्वारा इसकी जाँच की जा सके। इससे पुस्तक का स्वरूप प्रदान कर दिया जाता है जिससे

M.A. 1st Sem.

Sub- Psychology (Research methodology)

Prof. (Dr.) Krishnanand (Continue)

Date- 08-04-2021

~~अविष्य~~ भविष्य के अन्य जागरूक एवं उत्सुक शोधार्थियों द्वारा प्राप्त परिणामों की जानकारी प्राप्त होती रहे।

The End

x